बी. ए. प्रोग्राम – द्वितीय वर्ष
IV सैमेस्टर (हिन्दी ख)

प्रश्नपत्र – हिन्दी गद्य का उद्भव और विकास (62051412) (हिन्दी-ख)
(शैक्षणिक सत्र की समाप्ति की अंतिम तिथि – 27 अप्रैल 2020 की लैक्चर-कक्षा व पाठ्यक्रम की समाप्ति के लिए अतिरिक्त कक्षाओं की पठन-सामग्री)

ध्यातव्य टिप्पणी – प्रिय विद्यार्थियों! आपके पाठ्यक्रम के अन्तर्गत आने वाले बिबिया, सदाचार का ताबीज़ व अंधेर नगरी पाठों की विस्तृत समीक्षात्मक सामग्री आपको भेजी जा चुकी है। इस सप्ताह निबन्धकार भारतेन्दु व 'वैष्णवता और भारतवर्ष' निबन्ध से सम्बन्धित पठन-सामग्री भेजी जा रही है। भारतेन्दु का विस्तृत साहित्यिक परिचय 'अंधेर नगरी' के संदर्भ में प्रेषित भाव-सामग्री से भी आप देख सकते हैं।

निबन्धकार भारतेन्दु

निबन्धों में गद्य का पूर्ण विकास प्रस्फुटित होता है। भारतेन्दु ने अपने युग की सांस्कृतिक एवं साहित्यिक चेतना के साथ-साथ हिन्दी भाषा के स्थिरीकरण का महती कार्य भी किया था। उस समय के सामाजिक

Scanned with CamScanner

एवं संक्रांति-संघर्ष के बीच अपनी आँखें खोलने वाले हिन्दी भाषा के गद्य में भारतेन्दु (1850-1885) के निबन्धों ने शिलान्यासी-शिल्पी का कार्य किया था।

भारतेन्दु से पूर्व हिन्दी गद्य का रूप ही नहीं बन पाया था। भारतेन्दु ही हिन्दी गद्य की विभिन्न शैलियों और साहित्यिक रूपों के मूल कथाकार थे। इनसे पूर्व निबन्ध लेखन की कला का कोई रूप नहीं था। सर्वप्रथम हिन्दी-निबन्धों का रूप भारतेन्दु द्वारा प्रकाशित-सम्पादित पत्रों में उनके ही द्वारा लिखे गये सम्पादकीय लेखों में देखने को मिलता है। ये सम्पादकीय लेख सामयिक-सामाजिक गतिविधियों पर जनता का मार्ग-प्रदर्शन करने हेतु लिखे गये थे। उस युग में समाज भी सांस्कृतिक, राजनीतिक तथा आर्थिक संघर्ष से गुज़र रहा था। उस संघर्ष के बीच जनता को सही मार्ग दिखाने की आवश्यकता का अनुभव भारतेन्दु को निःसन्देह युग चेता, कलाकार का गौरव प्रदान करता है।

अस्तु, हिन्दी के निबन्धों ने सामाजिक, सांस्कृतिक एवं साहित्यिक संघर्षों के बीच जनता के मार्ग-प्रदर्शन के महती उद्देश्य से जन्म ग्रहण किया था।

Scanned with CamScanner

भारतेन्दु के निबन्धों की पहली विशेषता है - समाजसापेक्षता। वे देश की सर्वतोमुखी जन-जागृति के सन्देशक थे।

दूसरी विशेषता है - विषयों की विविधता भारतेन्दु ने सामाजिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक ऐतिहासिक, यात्रा सम्बन्धी, आत्मकथात्मक, धार्मिक, गवेषणात्मक, राजनीतिक, प्रकृति-संबंधी, व्यंगात्मक तथा हास्य आदि विषयगत निबन्ध लिखे थे। इन विषयों पर भारतेन्दु द्वारा लिखे गए निबन्धों में प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से नयी चेतना व्यंजित होती है।

भारतेन्दु के निबन्धों ने दो युग-विधायक कार्य किये थे। पहला कार्य - विषय से सम्बन्ध रखता है, दूसरा भाषा-शैली से। निबन्धों के विविध विषयों ने युग चेतना को एक नया मोड़ प्रदान किया था और जनविचारों का परिष्कार एवं संस्कार किया था। दूसरा महत्वपूर्ण कार्य इन निबन्धों ने किया - - भाषाशैली के स्थिरीकरण और निखार - विकास का।

चेतना की दृष्टि से विचार प्रधान निबन्धों में व्यक्त विचार समाज-सापेक्षता रखते हैं और किसी न किसी विशेष उद्देश्य को सम्मुख रखकर ही लिखे गये हैं।

→

Scanned with CamScanner

सांस्कृतिक निबन्धों के सृजन से भारतेन्दु का उद्देश्य स्पष्ट परिलक्षित होता है। सांस्कृतिक निबन्धों की रचना के माध्यम से भारतेन्दु अनेक सार्थक उद्देश्यों को पूरा करते हैं— जनता में फैली सांस्कृतिक भ्रांतियों, अन्धविश्वासों और रूढ़ियों के प्रति जनता को नयी चेतना देना, देश की प्राचीन और अर्वाचीन स्वस्थ और अस्वस्थ संस्कृति के बीच अलगाव कर सांस्कृतिक चेतना को एक नयी दिशा देना, पाश्चात्य सभ्यता एवं संस्कृति के सम्पर्क से जनता में अपनी सभ्यता-संस्कृति के सम्बन्ध में आयी हीन-भावना का परिशोध कर जनता में स्वाभिमान और राष्ट्रीय गौरव की भावना उद्बुद्ध करना आदि ऐसे ही लक्ष्य हैं।

भारतेन्दु भाषा के संदर्भ में उर्दूमिश्रित हिन्दुस्थानी व संस्कृत हिन्दी से विकसित सरल हिन्दी के पक्षपाती रहे हैं। भारतेन्दु द्वारा स्थिर हिन्दी का रूप ही ठीक सिद्ध होता है अर्थात् सरल मुहावरेदार हिन्दी जो जनता में प्रचलित शब्दों को ग्रहण करती हुई निरन्तर अपना शब्द-भंडार विकसित करती चलती है। भारतेन्दु ने इस मध्यम मार्ग का अवलम्बन किया था। हर प्रश्न को हल करते समय उनके सामने जनता का हित होता था। विशाल जनता का हित उनके दृष्टिकोण को व्यापकता प्रदान करता था और तभी

Scanned with CamScanner

उनके विचार जनता के लिए ग्राह्य और मार्गदर्शक हो जाते थे। इसी आधारभूत दृष्टिकोण ने भारतेन्दु के निबन्धों को युगचेतना का संवाहक बना दिया था।

भारतेन्दु के निबन्धों में एक अपूर्व आत्मीयता है। उनके निबन्धों में यह विशेषता इसलिए आ सकी क्योंकि विषय, भाषा तथा शैली की दृष्टि से वे पाठक के हृदय से आत्मीयता स्थापित कर लेते थे। उन्हें पढ़कर पाठक अनुभव करता था कि उसके ही हृदय के भाव वाणी पा रहे हैं।

भारतेन्दु ने अपना समस्त साहित्य, साहित्य सृजन के लिए ही नहीं निर्मित किया, वरन् जनता के लिए; उसकी भाषा शैली में और उसकी चेतना के परिष्कार के व्यापक उद्देश्य से उन्होंने साहित्य-सृजन किया। उनके विचार से जन उपयोगिता, जनता के विचारों का परिष्कार एवं अभिव्यक्ति ही साहित्य का महती उद्देश्य था। विषयगत, भावगत एवं शैलीगत जनपरकता ही उनके निबन्धों की सबसे बड़ी विशेषता थी; जिसने उस युग के ही नहीं, आगामी युग के निबन्ध-साहित्य को भी प्रभावित किया था।

(आगे, आपके पाठ्यक्रम में लगे निबन्ध वैष्णवता और भारतवर्ष से सम्बन्धित

पठन-सामग्री दी जा रही है, आप इसमें यथास्थान निबन्ध की पंक्तियों को उदाहरण स्वरूप उद्धृत करें। यह विचार-सामग्री इस निबंध की व्याख्या को समझने में भी सहायक होगी।)

वैष्णवता और भारतवर्ष

'वैष्णवता और भारतवर्ष' निबन्ध गंभीर विचारों की भित्ति पर आधारित है और भारतेन्दु ने अनेक उद्धरणों से अपने तर्कों की पुष्टि की है। जिससे प्रकट होता है कि पर्याप्त अध्ययन से उन्होंने इस लेख को लिखा था। इस लेख में भारतेन्दु ने वैष्णवधर्म को ही भारतवर्ष का आधारभूत धर्म माना है और उसे अनेक तर्कों से पुष्ट किया है। वही धर्महीन होकर नाना मत-मतान्तरों में बँट गया है, इससे ही सारी उलझनें पैदा हो गई हैं। धार्मिक पतन के साथ-साथ भारतेन्दु ने इस निबन्ध में तत्कालीन दुरवस्था, अंग्रेजी परस्परीनता और उससे उत्पन्न दरिद्रता, विचारों की संकीर्णता आदि विचारों पर भी तीखे व्यंगों के द्वारा प्रकाश डाला है और नयी दिशा का निर्देश किया है।

निबन्ध के अन्तिम अनुच्छेद द्रष्टव्य है — "जिस भाव से हिन्दू मत अब चलता है उस भाव से आगे नहीं चलेगा। ------ अब अपना परमधर्म यह रखो कि आर्यजाति की एका हो। इसीमें धर्म

की रक्षा है।" (पृ-71-72)

इस लम्बे उद्धरण में कितनी सरलता से तत्कालीन धार्मिक, राजनैतिक, सामाजिक एवं आर्थिक यथार्थ के प्रकाश में भावी की चेतावनी और नया भविष्योन्मुख संदेश दिया गया है। कुछ विद्वान इसमें साम्प्रदायिकता की बू पा सकते हैं। इसमें संदेह नहीं कि भारतेन्दु का दृष्टिकोण अनेकांश में हिन्दू हित की सीमा से बंधा था, पर यह नहीं कि वे मुसलमानों के गुणों के प्रशंसक नहीं थे और उन्हें विदेशी मानते थे। उन्होंने मुसलमानों को भी सब के साथ मिलकर देश हित करने का और अपना विकास करने का संदेश दिया है। कुछ समीक्षकों के अनुसार इस दृष्टि से युगचेतना को देखते हुए भारतेन्दु के ये संकुचित विचार क्षम्य हैं पर हैं ये संकीर्ण और संकुचित ही — इस सत्य को भी नकारा नहीं जा सकता।

'वैष्णवता और भारतवर्ष' भी एक सांस्कृतिक पर विचार प्रधान निबन्ध है। इसी लिए सांस्कृतिक निबन्धों की निम्न विशेषताएँ इस निबन्ध में भी मिलती हैं —

(1) देश वासियों के सम्मुख स्वस्थ सांस्कृतिक गौरव को प्रस्तुत करना।

→

Scanned with CamScanner

(2) प्राचीन रूढ़ियों और कुरीतियों से जनता को सचेत करना।

(3) प्राचीन स्वस्थ-अस्वस्थ का निर्देश कर तत्कालीन परिस्थितियों की अनुरूपता में उनके ग्रहण का निर्देश करना।

(4) विदेशी सभ्यता और संस्कृति के कुप्रभावों से जनता को सजग करना और राष्ट्रीय स्वाभिमान का भाव जागृत करना।

(5) देश की सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक यथार्थ दुरवस्था का सही चित्र उपस्थित कर जनता को देशोन्नति के मार्ग पर अग्रसर करना और उसमें नयी चेतना देना।

(6) देश की विभिन्न जातियों एवं धर्मों में परस्पर एकता स्थापित करना।

(उपर्युक्त समस्त विचार बिंदुओं को वैष्णवता और भारतवर्ष के संदर्भ में देखें व उदाहरण स्वरूप पंक्तियाँ भी लें।)

विवेच्य निबन्ध की भाषा और शैली सरल और सीधी है। अपनी बात को भारतेन्दु ने कितनी दृढ़ता, सरलता और किस स्पष्टता के साथ रखा है कि वह सीधी हृदय में प्रवेश कर जाती है

→

इस निबन्ध में विचारों की गंभीरता को भाषा की ओजमयता द्वारा प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया गया है।
भाषा की प्रवाहमयता का गुण विवेच्य निबन्ध को सरस बनाने में सहायक हुआ है।

(भाषा के लिए उदाहरण आप स्वयं निबन्ध से ले लें।)

अंततः कहा जा सकता है कि वैष्णवता और भारतवर्ष निबन्ध का राष्ट्रीय चेतना के उन्मेष में बहुत महत्त्व है।

(आपका समस्त पाठ्यक्रम समीक्षात्मक सामग्री के साथ समाप्त हो गया है। यदि किसी प्रकार की समस्याएँ हों तो आप मुझसे फोन पर सम्पर्क कर सकते हैं।)

साभार -सहायक ग्रंथ:-
1. भारतेन्दु साहित्य
2. भारतेन्दु हरिश्चन्द्र और हिन्दी नवजागरण
तथा भारतेन्दु से संबंधित अन्य समीक्षात्मक पुस्तकें।

डॉ. रश्मि बहल
(हिन्दी विभाग)

Scanned with CamScanner